Chitor

चित्तौड़

श्री "परदेशी" साहित्यरत्न
"Pardeshi"

गवालियर प्रकाशन मण्डल
गुना (गवालियर स्टेट)

प्रकाशक

ग्वालियर प्रकाशन मण्डल

गुना (ग्वालियर स्टेट)

अप्रैल १९४५ × × × गोंडल्स प्रेस, नई दिल्ली

सम्मतियां

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण जी गुप्त :—

चित्तौड़ की कविता बड़ी ओजस्विनी है, लेखक ने अपने विचार तथा भाव प्रभावपूर्ण ढंग से प्रकट किए हैं।

चिरगांव (झांसी) मैथिलीशरण गुप्त

हल्दीघाटी के प्रसिद्ध रचयिता, देव-पुरस्कार विजेता
महाकवि पं० श्रीश्यामनारायण जी पांडेय :—

'परदेशी' जी की 'चित्तौड़' नामक पुस्तक आदि से अंत तक पढ़ी, कविताएं बड़ी जोशीली हैं, पढ़ते समय रोएं फड़कने लगते हैं, चित्तौड़ का प्राचीन इतिहास आँखों के सामने फिर जाता है और एक बार फिर अपने गत गौरव पर क्षण भर के लिए

वक्षस्थल उन्नत हो जाता है। आशा है, 'परदेशी' जी की लेखनी में वह शक्ति पैदा होगी, जिससे राजपूतों की निद्रित वीरता तड़ित् सर्पिणी की तरह फुफकार उठेगी और सारा राष्ट्र प्रकाश में आजाएगा।

सारंग तलाब
बनारस

श्रीश्यामनारायण पांडेय

कविवर पं० सोहनलाल जी द्विवेदी

एम० ए०, एलएल० बी० :—

'परदेशी' जी की कविता विकासोन्मुख है, उनमें जोश है और प्रवाह भी, विषय उन्होंने उसी के अनुकूल चुना है।

उनमें हम किसी आने वाले वीर कवि की कल्पना सहज ही कर सकते हैं।

अधिकारी ऑफिस
लखनऊ

सोहनलाल द्विवेदी

निवेदन

चित्तौड़ वीरों की भूमि है। शौर्य, साहस और पराक्रम उसे प्रकृति से ही मिले हैं। उसके रज २ में इतिहास है, उसके प्रत्येक कण में करोड़ों काव्य हैं।

चित्तौड़ को वीरों ने हृदय-रक्त से सींचा और वीरांगनाओं ने सुहाग-सेंदूर से संवारा। भारत का यह मुकुट-मणि आज भी उसी शान से किसी विद्रोही की वाट जोह रहा है।

चित्तौड़ ने जौहर-ज्वाला सजाई और मुग़लवंश समूल नष्ट हुआ। खिलज्रियों ने चित्तौड़ की अग्नि-वालाओं के सतित्व की ओर पाप-दृष्टि से देखा—और वे भस्म हुए।

चित्तौड़ पाप-पुँज पर पवित्रता की चिन्गारी है। स्वतंत्रता के इस अमर-दुर्ग के लिए मैंने जो कुछ

लिखा वह महासिंधु की एक क्षुद्र बूंद है। 'चित्तौड़' मेरी प्रथम कृति है। आज से चार वर्ष पूर्व इसकी रचना हुई थी। मित्रों के उत्साह एवं अनुरोध से अब प्रकाश में आ रही है।

यदि पाठकों को इसमें से एक भी पंक्ति पसन्द आई तो मैं अपना श्रम सफल समझूँगा।

मंदसौर (ग्वालियर स्टेट)
१६. ३. ४५.

परदेशी

चित्तौड़

बलिवेदी सूनी है कबसे,
समरांगन युग युग से खाली,
चित्तौड़ देश चमकादे तू
फिर उसमें लोहू की लाली !

चल खप्पर लेकर रण-काली !

त्यौहार मरण का बुला रहा,
अपने सब साज सजाले तू !
सोये क्यों तेरे वाद्य मुखर,
ताण्डव की ताल बजाले तू !!

भर रोष, रगों में जोश नया,
यह वार न जा पाए खाली
चल खप्पर लेकर रण-काली !

वह देश दिखाता तुझे, जहां
हाड़ों के हैं भण्डार भरे,
तेरे पद-तल की पूजा को
कंकालों के उपहार धरे ।

मुर्दों की संख्या कौन गिने ?
मिट गये अनेकों दानव-दल,
जिनकी हुंकारों से चंचल
होगये धरा औ' मेरु अचल !

उनकी सुन समर कहानी तू
पी पी ढुलका शोणित प्याली,
चल खप्पर लेकर रण-काली !

सब जा सकता, लाज न जाए,
उन सिंहनियों की चाह यही,
जल गई धधकते जौहर में,
पर मुख से निकली आह नहीं,

कितने सपूत थे वीर प्रखर,
कितने जननी के लाल अमर,
डिग गया काल पर वे न डिगे,
ले गए विजय-श्री जीत समर !

चंडी! ठंडी है चिता-ज्वाल
सुलगा दे उसको मतवाली।
चल खप्पर लेकर रण-काली!!

तरु-पातों के नव महल बने
था प्यार घास की रोटी से,
हल्दीघाटी में आग लगी
बोटी टकराती बोटी से।

जीने मरने की क्या चिन्ता,
लड़ते थे बर्छी छोटी से
रे, लाख मरण बरसे उस दिन
गिरि अरावली की चोटी से।

धुल गई धरा, खुल गई माँग,
वह मंद पड़ी सेंदुर लाली,
चल खप्पर लेकर रण-काली।

ढलने दे प्याले पर प्याले–
मस्ती के, फैले उन्मादी–
बलिदान युगों से माँग रही,
भारत में भूखी आज़ादी।

सम्मुख बाधा के अचल खड़े,
पथ में शत कांटों की डाली
त्यौहार मरण का बुला रहा,
चल खप्पर लेकर रण-काली!

* * *

चित्तौड़

तेरे भाले में चमक अभी,
उन तलवारों में पानी है।
तेरी मैं क्या गाथा गाऊं,
तू खुद चित्तौड़ कहानी है!

चित्तौड़

इस पर तन मन जीवन वारा
इस पर मोहित है जग सारा,
यह भारत का सच्चा गौरव
यह भारत का रक्षक प्यारा,

यह तीन लोक से है न्यारा,
इससे है कौन नहीं हारा
यह सतियों का पावन अंचल
यह माँ की आँखों का तारा,

यह इन्द्रलोक भारत का है
सुरपुर मेवाड़ी रानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का।

चित्तौड़

वीरों का सच्चा तीर्थ यही,
इससे शुचि कोई जगह नहीं
जग देख भला बतलाओ तो
ऐसी धरती है और कहीं ?

शूरत्व यहीं रहता सुख से,
शूरों को यह अवनी प्यारी
वह देवपुरी, नन्दनवन भी
इस पर हैं वारी, बलिहारी।

पूजा का भी, है स्थान यही
जाग्रति के अमर निशानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

चित्तौड़

नत मस्तक सुरगण यहाँ सदा
वरदान माँगने आते हैं,
कितने ऋषि, मुनिवर इस थल पर
झुक झुक कर शीश झुकाते हैं।

हाँ, यही भूमि अपने दिल से
चुनली सोने को वीरों ने।
था यहीं लुटाया खुल खुल कर
अपना सर्वस्व फकीरों ने।

था यहीं देश-भक्तों ने मिल-
कर होम किया अरमानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

* * *

चित्तौड़

इसमें दुनिया की शान भरी,
इसमें जीवन का सार भरा,
इसमें सतियों की लाज भरी,
इसमें प्रताप का प्यार भरा।

इसमें जलते अंगारे हैं,
इसमें धक् धक् जलती ज्वाला,
इसमें बस शोले, चिन्गारी,
इसमें है रण-चंडी वाला।

नव भावों का भंडार यही,
यह रखवाला कुल कानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

चित्तौड़

इसमें सविता सा तेज भरा,
इसमें है ऊषा सी लाली,
इसमें आँधी सा साहस है
इसमें हिम्मत हिमगिरि वाली,

इसमें तूफानी बल-विक्रम
इसमें मेघों का गर्जन है
इसमें सरिता का वेग भरा
इसमें सागर का तर्जन है,

इसमें लहरों के परिवर्तन,
यह जगमग जोश जवानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

✠ ✠ ✠

चित्तौड़

पर्वत-माला ने रूप दिया,
सूरज ने शौर्य अनूप दिया
इस अजय दुर्ग को विधिवर ने
बाप्पा रावल सा भूप दिया।

भामा ने गौरव दान दिया,
राणा प्रताप ने मान दिया,
इस वीर दुर्ग की विजय हेतु
वीरों ने है बलिदान दिया।

सतियों ने इसे सुहाग दिया,
भूपतियों ने निज भाग दिया
शत भोली कुल-बालाओं ने,
अपना मधुमय अनुराग दिया,

इसको ज्वाला का ताप मिला
गिरिवर का मौनालाप मिला,
कवियों की प्रतिभा इसे मिली,
शूरों का शौर्य अमाप मिला।

✣ ✣ ✣

इस सूने उपवन में अब भी
गाती बुलबुल, बन की रानी
यह उजड़ी दुनिया, शेरों की
मानी जाती है रजधानी।

रजपूती गरिमा चमक रही,
इन जीर्ण शीर्ण पाषाणों में,
गुण त्याग नित्य भरती है जो
मुर्दा दिल, सूखे प्राणों में,

चित्तौड़

पावन प्रतीक, प्रिय कीर्ति दीप,
यह रण-गज के पिलवानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

दल दिए करोड़ों दल इसने,
लाखों को ज़िन्दे गाड़ दिये
मल दिए हज़ारों को पल में
कितनों को मार पछाड़ दिए,

बादल से रिपु के दल आए
बूंदों मिस थे गोले छूटे,
तोपों ने विष इस पर उगला,
कितने सैनिक इस पर टूटे !

कोई भी तो कुछ कर न सका
डर था सबको प्रिय प्राणों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

भय खा गोले वापिस लौटे
टकरा कर इसकी ईंटों से,
जल गये हाय अरि, रजपूती-
शोणित के उबले छींटों से !

तुम 'किला' 'किला' कहते साथी !
यह किला न, इसको काल कहो,
जो ज्वाला को भी भस्म करे
इसको वैसी ही ज्वाल कहो।

यह अमर दुर्ग है चाह रहा,
फैले सत्याग्रह प्रहलादी—
रे. नहीं मांगने से मिलती,
प्यारी स्वतंत्रता—आज़ादी !

कुछ करो, मरो, स्वर गूंज रहा,
सुन लो सूनी चट्टानों में,
माँ माँग रही है कुर्बानी
कह रहा कौन यह कानों में ?

सब के सिर पर फिर कफ़न बँधे
सम्मुख हो ज़हरीला प्याला,
कर में कर गूंथे मुसक्याती
चलती हो संग मरण-वाला,

दम्-दम् दीवानी दमक रहे,
चम्-चम् चपला की चमक रहे,
झम्-झम् हों झंकारें फिर भी
धम्-धम् बढ़ती पद-धमक रहे!

तीखी भाले की अनी रहे,
वीरों की मूँछें तनी रहे
लोहू की लथपथ लाली में,
भाले की नोकें सनी रहे।

ऐ अमर, बाँध ले आज कमर
करना है तुझको भीम समर,
रण कौशल अपना दिखला दे
बज उठे दमामे घमर घमर,

चित्तौड़

रे, यहां सदा अपमान हुआ है,
उन शाही फरमानों का।
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

भागे कितने वैरी इससे,
जागे कितने वैरी इससे,
हारे जितने वैरी इससे
हारे उतने जग में किससे?

'चित' तोड़ दिये अरि के इसने,
'चित्तौड़' इसी से नाम पड़ा,
वह कौन शक्ति जग में जिससे
हो नहीं वीर चित्तौड़ लड़ा?

चित्तौड़

स्वागत होता पर यहाँ सदा
दुश्मन के भी महमानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

✤ ✤ ✤

राणा का गर्जन गूंज रहा
कुम्भा की भैरव ललकारें,
मारुत की साँय २ में है,
अरि-दल की कातर चित्कारें,

बाप्पा की बोली बोल रही,
साँगा की तीखी तलवारें,
इन प्रतिध्वनियों में जाग रही
हम्मीर वीर की हुंकारें !

योद्धाओं का बल उछल रहा,
राणा प्रताप की मस्ती है,
इस महानाश की दुनिया से
तुम मौत ख़रीदो सस्ती है !

सोये शिशुओं की लाशें हैं
पगली मीरा की विष-प्याली,
गोरा की वीर वधूटी के—
उस बिखरे कुंकुम की लाली,

संगर—भू अब भी लाल, लाल—
आँखों वाले रजपूत खड़े,
उस भीम भयानक अवनी में
मुग़लों के वीर बुज़ुर्ग गड़े।

कबरों में पड़े हुए अब भी
दुख से वे 'हाय' कराह रहे
भाले की भीषण चोटों से
घायल होकर भर आह रहे,

तइमूरलंग तो चल न सका,
उसको 'यह दिल्ली' दूर रही,
बाबर शराब पीना भूला
इस वीर दुर्ग की शान यही!

महमूद मालवा से झपटा
उसकी चालें बेकाम हुई,
मेवाड़-सिंह की गर्जन से
अकबर की नींद हराम हुई!

चित्तौड़

आकाश शीश पर उठा लिया,
'अल्ला' की करुण पुकारों ने
दिन में ही सपने दिखलाए
उस दिन रजपूती वारों ने,

इतिहास अनोखा, अनुपम है
इसके प्रेमी-परवानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

धोखे में मदिरा पीने पर,
राहप ने पश्चाताप किया,
पी लिया गरम सीसा उसने
कहलाया जग में 'सिसौदिया।'

चित्तौड़

वह 'काल भोज' बाप्पा जिसने
जीता था देश खुरासानी
प्रमुदित होकर सादर जिसकी
हारित ऋषि ने की अगवानी,

हां, उसी वीर बाप्पा की यह
चित्तौड़ रहा है रजधानी
जिसके साहस ने विजय किया
मोरी राजा वह अभिमानी,

वह संग्रामों का जीवनधन
स्नेही केसरिया बानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

चित्तौड़

बग़दाद ख़लीफा अलमामूं
था इस गढ़ को लेने आया,
बलि देदी पीर पठानों की
फिर भी कर मल कर पछताया,

रण कौशल देखा जी भर कर
उसने खुम्माण हठी का था
पर फिर भी हार, पराजय का
उसके मस्तक पर टीका था,

मत व्यर्थ मान लेना इसको
परिणाम कहीं वरदानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का।

चित्तौड़

कायर खिलजी लेने आया
पद्मिनी रूप की रानी को
उस सुन्दरता की नवनिधि को
उस मादक छवि, लासानी को,

रे, जला दिया कुँदन सा तन
उस रत्नसिंह की प्यारी ने,
अपने सतित्व की रक्षा की
उस वीरा वीर कुमारी ने।

खिलजी ने तभी चकित देखा
पौरुष सच्चे इन्सानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

इस संगर में होगया अमर
वह सिंह लक्ष्मण बलशाली
उसने इतना संहार किया,
थक गई रुधिर पीते काली,

उसके छोटे से आठ कुंवर
हां, इसी युद्ध में खेले थे
हँस २ भाले सबने अपने
गोरे, कृश तन पर झेले थे।

भूमि भी भीर सह सकी नहीं,
उनके अगणित अहसानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का।

चित्तौड़

हम्मीर वीर शासक जिसने
धधका दी भीषण रण-होली,
तुग़लक को क़ैद किया, जिसने
जीता था सहसा सिंगोली—

हां, काँप उठा थर् थर् उससे
इस जगती का कोना कोना,
हो गया कठिन दुश्मन को तब
खाना, पीना, रहना, सोना।

अम्बर, रवि, तारों से पूछो
विवरण उसके अफसानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

चित्तौड़

गौओं के शोणित से गीला
कलुषित जब वह नागौर हुआ,
यवनों के अत्याचारों से
जनता में जब अति शोर हुआ,

चढ़ गया क्रोध कुम्भा को तब,
आँखों से वह निकली ज्वाला
लाखों की गर्दन, सीनों पर
चल गया अरे उसका भाला।

भर दिया शीघ्र आँगन उसने
खिलजी के कबरिस्तानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

चित्तौड़

आँखों में भीषण घाव लगा,
दो हाथ, पैर बेकार हुए,
तेवर तेवर ने बदल दिए
बागी साथी सरदार हुए,

तलवार, अश्व भी पास नहीं,
रूठी है चंचल जय बाला,
तब भी अरि-दल से जूझ गया
साँगा अस्सी घावों वाला,

हो गई जीत, हो गई जीत,
हारा दल तुर्क, पठानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

चित्तौड़

अपने रीते मानस में रे,
अनुराग लिए वह जलता सा—
कब से उन सूनी पलकों में
वैभव का स्वप्न बदलता सा—

शीतल समाधि पर एक दीप
आभायुत झिलमिल जलता सा—
एकाकीपन में भार लिए
रण मैदानों में चलता सा—

जीवन की जलती ज्वाला में,
कल कंचन मिस यह ढलता सा
रे, कौन प्रलय को बुला रहा,
मरने को आज मचलता सा ?

तुम तनिक ठहर जाओ चूड़ा !
रानी ने निज सिर भेजा है,
उसने 'गौरव की रक्षा' की
अपना कुल-मान सहेजा है !

अपने थे पर नित दूर रहे,
सपने थे पर निद्रा न लगी,
दो पल को बन्द हुई आँखें
दो पल ही में तो हाय जगी,

आशा के मधु-पुर भंग हुए
अभिलाषाएं न हुई पूरी,
हल्दीवाला था मुख सम्मुख
चोटीवाला माँग सिंदूरी—

रे, आग लगी प्रति रोम रोम,
रे धधक उठी तन में ज्वाला,
क्षण भर को दिनकर अस्त हुआ
पल भर को चमचम उजियाला

वैरी प्रेयसि का प्यार बना,
ऋतुपति ही तो पतझार बना,
उपवन का हंसता सुमन अरे,
असमय ही पथ का खार बना !

उर का संशय निज भार बना,
कलिका-दल ही असि-धार बना
रानी के सिर का हार बना—
शिव चूड़ावत सरदार बना।

मुर्दों की आज बढ़ी संख्या,
रिपु के दल में कोलाहल था,
अगणित योद्धाओं से बढ़कर,
रणजेता चूड़ा का बल था!

वह तीन लोक का विद्रोही,
वह बागी सात जहानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

✣ ✣ ✣

वन में रहना स्वीकार मुझे
तृन की रोटी से प्यार मुझे,
यदि दास बनूँ यवनों का तो
जग में जीना धिक्कार मुझे,

सुख, वैभव की परवाह नहीं,
महलों की मुझको चाह नहीं,
कुछ भी हो क्रूर विदेशी को
बस 'तुर्क' कहूँगा, शाह नहीं,

मैं सोये नाग जगा दूँगा,
अरि-वन में आग लगा दूँगा
देखूँ तो रोके कौन मुझे,
मैं प्रलय जगत में ला दूँगा !

आज़ादी का मतवाला हूँ
आहों की गूंथी माला हूं,
मुग़लों के उस सिंहासन को
मैं प्रलयंकारी ज्वाला हूँ,

चित्तौड़

तीरों से अमर मरेगा क्या
तोपों से काल डरेगा क्या,
देखूं तो मुझ दीवाने का
खल-दल-बल आज करेगा क्या ?

तूफ़ान उठे, उठने दो शत,
गिरती बिजलियाँ गिरें अविरत्
पर उन्नत जो मस्तक मेरा
वह हो न सकेगा अब अवनत,

मैं वैभव का उन्माद देख,
मैं दीनों का अवसाद देख,
विप्लव की ओर बढ़ा हूँ रे,
माँ के बंधन की याद देख,

मैं एक एक निर्बल जन को
सौ र बलियों का बल दूंगा,
मैं यमदूतों के दाढ़ तोड़,
बाधा को तले कुचल' दूंगा।

धन नहीं धर्म मुझको प्यारा,
भय क्या आँधी, तूफ़ानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

जब 'हर' 'हर' करते राजपूत,
उड़ चले हाय हथियारों में
तब था अति भीषण शोर हुआ
दिल्ली के बड़े बाजारों में !

दाढ़ी वालों से ढकी धरा,
हल्दी का आँगन लाल हुआ,
मर गये बिना मारे लाखों—
जब वह जलता सा काल हुआ।

वह प्रबल प्रलय की आग बना,
जय २ 'शिव-शंकर' बोल उठा,
हलचल फैली बैरी दल में
अकबर का आसन डोल उठा,

दौड़ा घोड़ा पहुंचा गज पर,
भाले ने अपना काम किया,
हौदे में कायर मान' छिपा,
मन में ईश्वर का नाम लिया,

'अल्लाह्' 'अली' का शोर मचा
जब उसने वह हुंकार किया
'भागो' का मंत्र जपा सबने,
जब रुष्ट रुद्र ने वार किया,

दम निकल गया पल में, कितने
गर्वित, मानी मुग़लानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

✠ ✠ ✠

अप्सरि की गोद पली, सुन्दर-
मोती सा रूप लिए प्यारी,
थी बड़ी हुई छवि की निधि में
रूप नगर की राजकुमारी—

चित्तौड़

वह कंचन क्यारी में केसर,
कलि सी प्रति पल खिल २ जाती
वह जूही, वह पाटल, बेला
वह गौर चमेली अलसाती,

अवरंगजेब था चाह रहा
महलों की वही बने रानी,
पर—कैसे इसको मान सके
वह राजसिंह राणा मानी,

मैं कानन की रस भरी मुकुल
खिल सकूं न दिल्ली आँगन में
प्रण यही प्राण प्यारे मेरा
महकूँ तो मेवाड़ी-वन में,

मैं मानी, प्यार न मान सका,
वर लिया मधुर ! तुमको मन में
अब चाह यही यह स्नेह विरल
रखलो राणा अपनेपन में,

मैं लाज त्याग कर भी अपनी
मैं धर्म छोड़ कर भी अपना
उसकी प्रिय बेगम बनूं, यही
वह पापी देख रहा सपना.

तुम बचा सको तो आजाओ,
ख़तरे में सत्य सती का है,
तुमसे राणा ! बस इतना ही
कहना इस चारुमती का है।

प्रिय सत्य लता मुरझाये ना,
इस हित राणा का रण भीषण
नारी की लाज बचाने को
वीरों का वह दुर्जयतर प्रण !!

वह चम्पक कलि, अवरंगज़ेब-
अलि, कैसे रे उसको लेगा,
सब दे सकता जब राजसिंह
तब क्योंकर चारुमती देगा।

फिर मुग़लों औ रजपूतों की
थी धार मिली तलवारों की
भागे थे जान बचा, न बची
बोटी दढ़ियल सरदारों की,

चित्तौड़

उस दिन भूले थे ध्यान मुग़ल
साक़ी, मदिरा, मयखानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

दिल्ली में वह दरबार लगा,
कितने भूपति भागे आये
झुककर कर्ज़न के चरणों में
सबने अपने शीश झुकाए।

क्या फतहसिंह भी आएगा,
क्या वह भी शीश झुकाएगा?
क्या नाहर बैठ सियारों में
कायर, किंकर कहलाएगा?

चित्तौड़

वहां फतह जाकर कैसे, क्यों
काम करेंगे दरबानों का ?
क्या देख रहे विस्मय से तुम
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

चल रही ट्रेन घर् घर् घर्
दिल्ली की ओर बढ़ी जाती
भर आँखों में आँसू राणा
पढ़ रहा अरे किसकी पाती :

बाप्पा का वह अर्जित गौरव,
मस्ती प्रताप मरदाने की
औ' मेवाड़ी पगड़ी ऊँची—
क्या सचमुच दिल्ली जाने की ?

चित्तौड़

तो याद करो कुछ ऐ राणा !
तुमको देवों–सा मान मिला,
तुम हिमगिरि से भी गुरुतर हो,
छोटा दिल्ली का लाल क़िला,

औरंगज़ेब ना झुका सका,
बाबर या अकबर अभिमानी,
उस पगड़ी को ही आज करे
नत, श्रीहत ये करज़न मानी

राणा आएंगे यह सुनकर
रे, अरुण कमल सा आज खिला
सोने के सपने देख रहा
मानी दिल्ली का लाल क़िला !

चित्तौड़

इकलिंग देव को छोड़ अरे,
मानव को शीश झुकाना क्या,
उस इन्द्रलोक से दूर देश
छोटी सी दिल्ली आना क्या !

जन मौन हुए सब सोच रहे,
धक् धक् भारत का हृदय हिला
सोने के सपने देख रहा,
निद्रित दिल्ली का लाल किला,

फिर हुक्म दिया रोको गाड़ी,
इस पथ को सम्प्रति छोड़ चलो
कुछ काम नहीं हमको दिल्ली,
लौटो वापिस चित्तौड़ चलो,

रे धन्य रे कह उठा जगत्
चमकाया नाम पुरानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

✣ ✣ ✣

जब जब भारत को व्यथित किया
विधर्मी विदेशी चालों ने,
तब तब स्वदेश की लाज रखी
चित्तौड़ देश के लालों ने,

इसकी गाथा से रंगा हुआ,
इतिहासों का पत्ता पत्ता,
इसकी ताक़त का पार नहीं
दुर्गम असीम इसकी सत्ता,

चित्तौड़

आवास रहा है यही सदा
सच्चे शूरों, बलवानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

सूनेपन में तूफ़ान लिए
वह पहली सी ही शान लिए
बरसों से उन्नत मस्तक में
अपनेपन का अभिमान लिए,

राणा का प्रिय आदेश लिए
उजड़े खंडहर का वेश किए—
यह खड़ा हुआ है सदियों से
मर मिटने का संदेश लिए,

चित्तौड़

आँधी पानी में आग बना
यह भारी विषधर नाग बना
है खड़ा अकंपित युग २ से
जग के जीवन का राग बना,

आँधी के प्रबल थपेड़ों से
फिर भीषण झंझावातों से,
यह डिग न सका, यह हट न सका
वैरी के वज्राघातों से,

अब भी साहस के साथ खड़े
यह टूटे, जर्जर दरवाजे—
इनमें झुककर रुककर जाते
थे अगणित राजे महराजे,

चित्तौड़

टूटी दीवालों में अब भी,
बाकी बल भीषण फ़ौलादी
अब भी इन बुर्जों के ऊपर
नाचा करती है आज़ादी,

अपने अतीत की यादों में
यह मौन हुआ दृग भर देखो,
झर झर करता निर्झर देखो
इसका आकुल अंतर देखो,

महलों से भी सौ गुना मूल्य,
इसके निर्जन वीरानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

चित्तौड़

छाती में अगणित घाव लिए
अंतर में कितने भाव लिए,
यह चिता सुलगती ढूंढ रहा
मन में मरने का चाव लिए।

इसके अणु अणु में ज्वार प्रखर,
कण २ में रे कोलाहल है
इसके जर्जर तन में अब भी
शत २ चट्टानों का बल है,

यह काल जाल से मरण खींच
अरि अवनीतल पर लाया है,
यह भूल भरे जगतीतल को
संदेश सुनाने आया है,

चित्तौड़

क्या देख रहे छज्जों को तुम ?
इस 'रावत' की स्मृति को देखो
यह कल्ला की छतरी देखो
यह जयमल की लीला लेखो,

कह रहे हमें सब मौन मौन,
तुम भी हम जैसे बन जाओ,
भय दूर करो मद चूर करो,
तन में साहस भर तन जाओ,

छोड़ो अब तो तुम ध्यान सभी,
मधुमय, मतवाली तानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का।

सरिता की सुन्दर शैया पर
सोती जैसे रातें चेती
वैसा ही झिलमिल रूप लिए
जैसा छवियुत सरि की रेती,

कुछ भाव लिए कुछ चाव लिए,
ऊंचे अम्बर की ओर बढ़े,
तकते रहते कबसे पथ को
गोरा—बादल के महल खड़े।

तुम बोलो किसको खोज रहे,
नीरव बन, आज प्रशांत महल !
वह सुख-सौरभ है गया कहां—
वह प्रतिपल की नव चहल-पहल !

चित्तौड़

सज्जित सेजों के पास खड़ी
लज्जित, उन्मन काया गोरी,
वह देख रही हा द्वार ओर!
पतली दुबली छाया गोरी।

सूना प्रतिपल, सूनी शैय्या
सूना उर, रातें भी सूनी,
यह किसकी स्मृतियाँ रह २ कर
हैं बढ़ा रही पीड़ा दूनी?

निशि बीत चली रे क्षण २ कर
आया न किंतु वह अभिमानी,
राजपुतों से भरे किले में
लुटी हाय, गोरा की रानी,

चित्तौड़

कुंकुम ले चमकी चिता-ज्वाल,
था अनल बना अरमानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

वह 'श्यामधाम' देखो कैसा
बनवाया प्रेम अधीरा का,
मादक, मनहर, मीठा, मोहक,
मंदिर मतवाली मीरा का,

विषधर भी था जिसके सम्मुख
नीलम मणियों का हार बना,
हेमन्त-काल के हिम समान
जगमग जलता अंगार बना,

था जहाँ प्रलयंकर काल स्वयं,
नत मस्तक सेवक सरल बना
जीवन दाता रे अमर-सुधा
वह घोर हलाहल गरल बना,

मारुत की उन्मद लहरी में
उस पगली की रुमझुम देखो,
वारिद की श्यामल शोभा में
मुरलीवाले को तुम देखो,

जय स्तम्भ गगन को चूम चूम,
किसकी जय को बतलाता है
किसके विस्तृत यश, वैभव का
यह ध्यान हमें दिलवाता है,

चित्तौड़

सुरसरि, शिव-सी महिमा रखता
कण २ इन सजग मसानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

शहिदों ने अपने शोणित से
इसका कण २ रज २ सींचा,
तुम स्वर्गों की बातें करते
है स्वर्गलोक इससे नीचा,

मांओं ने अपने अश्रु-सुमन
सच, यहीं चढ़ाए, यहीं-यहीं,
कितने भाई बहिनों ने मिल,
नित शीश नवाए यहीं–यहीं,

चित्तौड़

देखो तो विटपों की मर् मर्
कर रही मान मस्तानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

अधजला महल यह, नहीं नहीं
यह तो कर्णा की फुलवारी,
इसमें ही रंजित है कब से
उसकी अनुपम गाथा सारी,

यह जली मटी है नहीं अरे,
यह लिखी याद प्रणवीरों की
ये काली सी रेखाएं तो
हैं अमर कथा रणधीरों की,

चित्तौड़

इतिहास भरा इनमें ही है,
उन कोटिर बलिदानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

फरर फहराता ध्वज इसका,
कह रहा कथाएं कौशल की
गरवीला गमक र गाता—
गाथाएं गोरा-बादल की,

सन् सन् पवन सुनाता हमको
शूरों की प्रिय समर कहानी
कहती है यह नीरव बस्ती
हुई यहाँ कितनी कुर्बानी।

चित्तौड़

खेला जाता था खेल यहाँ
बस भाले, बर्छी, बानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

जो जीने की परवाह न कर
सोए काली करवालों पर
जो मरने की सब फिक्र छोड़
खेले जी भर भर भालों पर,

जननी के हित मरजाने की
नित जिनके मन में ललक रही
उनकी सागर, गिरि-सी महिमा
इसके रजर में झलक रही,

चित्तौड़

अब भी पावस-घन गुण गाता
उन चिर यश के यजमानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

जौहर की आग भरी अब भी
इन पदमिनि के प्रासादों में,
इन कर्णवती के महलों में
इन सतियों की उन यादों में,

अब भी देखो है तप्त धरा,
जौहर की जलती ज्वाला से,
अब भी मारुत यह गंधित है
चंडी की ढलकी हाला से,

जपते अब भी जप विहग यहाँ,
रण यज्ञों के आह्वानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

निर्झर का यह रोना सुन कर
सुधि आती वीर जवानों की
देखो तो पिक दुहराता है
कड़ियां झंडे के गानों की,

सैनिक वीरों की कीर्ति कथा
गुन गुन कर मधुकर गाता है,
इन खंडहरों को देख देख,
मन साहस से भर जाता है,

चित्तौड़

उस डाली पर बैठी मैंना,
वर्णन करती उन शानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

इन चूबतरों पर खेल रहा
उन्माद मधुर वह मरने का,
अब भी हमको देता है जो
संदेश नया कुछ करने का,

रे मरोर कुछ करो करो,
यह स्वर उस छतरी से आता
जालिम के हाथों जकड़ी, यह
दुख पाती है भारत माता,

चित्तौड़

फिर से वीरो ! आज मनालो
वह त्यौहार घमासानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

इन बुझी चिताओं में अब भी
है धधक रही विप्लव ज्वाला,
यह सूनी समाधियाँ अब भी
पी सकती ज़हर भरा प्याला,

अब भी आधी निशि में इनसे
निकला करती रण हुँकारें,
सुनना हो तो आना तुम भी
बनकर बाग़ी, माँ के प्यारे

चित्तौड़

असिधारों पर हंसते चलना
है खेल नहीं नादानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

✣ ✣ ✣

वही कोट हैं, वही दिवालें,
वही पोल चित्तौड़ वही है
पर, वे आज़ादी के प्रेमी
माँ के बाँके लाल नहीं है,

उन प्रिय लालों से हीन हाय
यह कंचन कानन है सूना,
उन सुमनों बिन यह आज अरे,
उपवन उजड़ा दिखता दूना,

हा, कौन यहां उपयोग करे,
अब तीखे तीर कमानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का।

आओ, बाप्पा रावल आओ,
आओ हम्मीर तुम्हीं आओ,
लूटा जाता यह देश अरे
फिर से वह होली धधकाओ,

आओ चूड़ा हम तरस रहे
वह रण कौशल दिखला जाओ,
आओ प्रताप, माँ रोती है
इसके आँसू पोंछो आओ,

चित्तौड़

आओ, हे कण २ वधक रहा
इन हल्दी के मैदानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

आओ खुमान, आओ लाखा,
हम दीन हीन भूखों मरते,
आओ, ऐ त्यागी राजसिंह,
ज़ालिम हमको व्याकुल करते,

आओ, आग लगादो जयमल
अरि के इन अत्याचारों में,
आओ फत्ता, तुम्हें बुलाती
भारत माँ करुण पुकारों में।

हम भूल गये बतला तो दो
सत्कर्म वीर सन्तानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का

✣ ✣ ✣

ऐ चित्तौड़! जगादो हम में
जागृति-ज्योति, जौहर-ज्वाला,
जग जाएं सारे वीर भाव
हो जाए फिर से उजियाला,

ऐ चित्तौड़! देश, पुर, वन में,
उस बिजली का संचार करो
ऐ चित्तौड़! राष्ट्र-जन-मन में
विद्रोह, क्रांति का प्यार भरो,

चित्तौड़

रे, चमक उठे फिर से जग में,
जौहर उन तीक्ष्ण कृपानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

ऐ चित्तौड़ ! हमें समझा दो,
चन्द्रावत वे लड़ते कैसे ?
ऐ चित्तौड़ ! सिखा दो हमको
सेना-नायक बढ़ते जैसे,

ऐ चित्तौड़ ! आज भारत में
फिर२ मेघों-सा जोश भरो,
ऐ चित्तौड़ ! शांत भारत में
नव तूफ़ानों का रोष भरो।

वैरी सेना थहरादें हम
चल लें तेरी पहचानों का
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

✣ ✣ ✣

दिशि दिशि में फैला अंधकार
तू दिनकर बन चित्तौड़ जाग,
सोये रहते तो युग बीता
अब इस निद्रा को छोड़, जाग,

ऐ उठ, विप्लव के दूत ! जाग
ऐ प्रलयंकारी पूत, जाग,
घरर में भीषण लगी आग
तू रण के भैरव भूत, जाग,

वीरों के उपवन जाग जाग,
शूरों के प्रिय मन, जाग जाग
मरदानों के तन, जाग जाग
योद्धाओं के धन, जाग जाग !

ऐ बीत न यह जाए वेला,
रे, अब मेरे चित्तौड़ जाग,
तू विप्लवाग्नि को आज प्रबल
उठकर सब दिशि में मोड़ जाग,

ऐ मतवालों के गेह, जाग !
नर-कंकालों की देह, जाग !
मर मिट जाने के नेह, जाग !
रे अति वर्षा के मेह, जाग !

ऐ मस्तानों के मान जाग,
ऐ बलवानों की शान जाग,
ऐ प्रिय भारत की आन, जाग,
तू स्वतंत्रता के गान जाग!

ऐ शूरों के सरदार, वीर
मेरे प्यारे चित्तौड़, जाग!
तू चट्टानों को तोड़ पुनः
उन पातालों को फोड़ जाग!

ऐ विश्व-भूति के भाल, जाग,
ऐ भारत माँ के लाल, जाग,
ऐ उठ वैरी के काल, जाग,
तू हथकड़ियों के जाल, जाग

चित्तौड़

ऐ उठ तांडव की ताल, जाग,
ऐ सिंह-मूंछ के बाल जाग,
ऐ राष्ट्र, धर्म की ढाल जाग,
तू सामंतों की चाल, जाग,

सब तेरा पथ हैं रहे देख,
ऐ अभिमानी चित्तौड़, जाग,
यह सोने का न समय प्यारे,
जागृत जग से कर होड़ जाग,

ऐ रण के प्रिय अनुराग, जाग,
भोले भारत के भाग, जाग,
ऐ तू मेवाड़ी नाग! जाग,
राणा प्रताप के फाग, जाग,

चित्तौड़

ऐ राष्ट्र-विटप के फूल जाग,
बेड़ी-बंधन के शूल, जाग,
शोणित-सागर के कूल जाग,
उठ जौहर व्रत के मूल, जाग,

सौ सौ सेनाओं के विजयी
तू वीर देश चित्तौड़, जाग,
अब देर न हो रण रंगराते,
यमदल से नाता जोड़, जाग !

ऐ प्रलयकाल की गाज, जाग,
माँ के आँचल की लाज, जाग,
बाप्पा रावल के बाज़, जाग,
तू दुर्ग, देश के ताज़, जाग,

चित्तौड़

आज़ादी के रण जाग जाग,
ज्वाला के कटु कण जाग जाग,
राणा के प्रिय प्रण जाग जाग,
वैरी उर के व्रण जाग, जाग,

रिपु रहा वीर ! ललकार आज,
तू बिजली-सा चित्तौड़, जाग,
विध्वंस-मेघ मिस गरज गरज
नभ की छाती पर दौड़, जाग !

ऐ सिसौदिया के प्यार, जाग,
ऐ तू तुर्कों की हार, जाग,
जग जीवन के आधार, जाग,
सौ सर्पों की फुफकार, जाग,

ऐ प्रलयी झंझावात, जाग,
ऐ कठिन वज्र के गात, जाग,
तू उठ रे स्वर्णिम प्रात जाग,
बीती रे अब तो रात, जाग,

सारी सेना है सजी आज,
तू भी सज, उठ चित्तौड़! जाग,
रे, क्या चिंता यदि अरि संख्या,
अगणित है, लाख-करोड़, जाग,

तू साधक कठिन तपस्या का
तू गायक अमर तरानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

* * *

चित्तौड़

वह ताज़महल देखा हमने
फिर देखे अगणित गढ़ भारी
पर, इसकी छवि, इसकी शोभा
दुनिया में है सबसे न्यारी,

इस दृढ़ गढ़ के कारण कितने
अब तक प्रलयंकर समर हुए,
इस दृढ़ गढ़ के कारण कितने
अब तक अवनी पर अमर हुए!

है ख़ून पिया इसने कितना
मुग़लों, तुर्कों, अफ़ग़ानों का!
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

इसके पत्थर किमती पारस
इसका कण २ हीरा मोती,
इसकी ईंटे, नीलम, पन्ना,
इसमें नव २ निधियाँ सोती,

यह रक्षक, पालक पोषक है
उस भीषण रण उन्मादी का
अंतिम वेला तक अटल रहे
यह रखवाला आज़ादी का,

यह साहस है शक्तावत का
यह जीवन है चौहानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

चित्तौड़

सिर यहां चढ़ाये जाते हैं
फूलों का कोई काम नहीं,
यह मनुज-मेध की बलिवेदी
फिर इस पर चढ़ते फूल कहीं ?

वर्षों पहले हां कभी यहां
पूजा होती थी मुँडों से
अर्चित अरि-शोणित कुंडों से
यह गढ़ ढक जाता रुंडों से,

युग २ तक याद रहेंगी, वे
मीठी बातें रणधीरों की,
संगर में हंसते सो जाना
मर कर गति पाना वीरों की,

चित्तौड़

है यही किला पहला गायक
प्रिय स्वतंत्रता के गानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का!

इस देव दुर्ग की रम्य छटा
सावन-सी सुन्दर, सुखकारी,
इस पर न्यौछावर राज-मुकुट
इस पर सारी निधियाँ वारी—

यह वीरों का विश्राम धाम
इसको शत बार प्रणाम करो,
सिर धूलि लगा इस अवनी की
तुम दुनिया में कुछ नाम करो,

चित्तौड़

यह शहिदों का पावन मठ है,
यह मंदिर है मरदानों का,
क्या देख रहे विस्मय से तुम,
चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का !

परिशिष्ट

[स्फुट]

मां के मस्तक जो मुकुट धरे
वह मिला न मुझको लाखों में
पर कैसे कहदूँ ज्वाल नहीं
चित्तौड़-चिता की राखों में।

दुखियों के रोदन उठते हैं
फिर जुल्म भयानक सरकारी
अब तो वैरी की दुनिया में
चित्तौड़ लगा दे चिन्गारी।

चित्तौड़

विप्लव की जलती राहों में
रे, तुझे बुलाती युग-वाणी
कबसे तेरा पथ देख रही
प्यारी स्वतन्त्रता—कल्याणी।

महलों में मदिरा के प्याले—
पी पी कर धनपति मतवाले,
कुटियों में सिर थामे बैठी—
रंकिनि को रोटी के लाले।

चित्तौड़ खड़ा तू अटल हाय,
पर अटल हमारा 'भाग' नहीं
बतला मेरे युवकों में क्यों
बलिदानों से अनुराग नहीं ?

चित्तौड़

मैं कबसे खड़ा पुकार रहा,
हिलता न हिमालय भारत का,
हा, धधक क्यों न उठता क्षण में
ठंडा जो गौरवहत् मृत का ?

शूरों की रक्तिम शपथ यही,
चालें तूफ़ानी रुकें नहीं,
बलिदान अनेकों हों चाहे
केसरिया झंडा झुके नहीं।

प्यारा भारत आज़ाद रहे
राणा का प्रण नित याद रहे
जुल्मों के काँटे कुचल चलें
विप्लव-आँधी आबाद रहे।

सतियों का अटल सुहाग रहे,
रजपूतों में वह आग रहे
जिसकी ज्वाला में मणियों मिस
जगमग भारत का भाग रहे।

रजपूत रहें चाहे घर में,
तलवार म्यान में रहे नहीं
हो जाए सब का प्रण भीषण,
अत्याचारों को सहें नहीं।

ठंडा है यज्ञ-कुण्ड कब से।
मिलता न उसे दिल दानी भी,
है चाह यही उसकी साथी,
जल जाए—एक जवानी भी।

[समाप्त]